1917 की रूसी क्रांति

रूस में 1917 में दो क्रांतियां हुई थीं। प्रथम क्रांति मार्च में हुई जो राजनीतिक क्रांति थी जिसमें स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत करके राजनीतिक प्रजातंत्र की स्थापना की और जिसके फलस्वरूप निरंकुश जारशाही का स्थान एक उदारवादी शासन ने ग्रहण कर लिया।

द्वितीय क्रांति नवम्बर में हुई जब लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक दल ने उदारवादी सरकार का अर्थात मध्यमवर्गीय प्रजातंत्रीय क्रांति का अंत कर समाजवादी क्रांति की तथा देश में समाजवादी शासन स्थापित किया। वास्तव में यह क्रांति रूसी क्रांति का दूसरा चरण था।

1917 की रूसी क्रांति के कारण –

(1) निरंकुश जारशाही –

1905 की क्रांति के बाद रूस में ड्यूमा की स्थापना द्वारा प्रजातंत्रीय शासन का आरंभ हुआ था। परंतु जार ने उसके अधिकारों में कमी करके एक परामर्शदात्री सभा बना दिया था। अतः उसका शासन और भी निरंकुश हो गया तथा जनता में विद्रोह की भावना बढ़ती जा रही थी।

(2) जार निकोलस की अयोग्यता –

जार में दृढ़ एवं निष्पक्ष शासन करने की योग्यता नहीं थी।

इसकी अयोग्यता के कारण देश में अव्यवस्था और भ्रष्टाचार पराकाष्ठा पर पहुंच गए थे।

(3) सामाजिक असमानता

1905 के बाद से समाज मुख्यतः दो वर्गों में बंटा हुआ था - (1) अधिकारयुक्त वर्ग और (2) अधिकारहीन वर्ग। प्रथम वर्ग (सामंत, जमींदार और राजा के कृपापात्र) अपने अनेक विशेषाधिकारों के कारण सम्पन्न था और द्वितीय वर्ग (किसान, मजदूर) पर अत्याचार करता था। दास प्रथा के उन्मूलन के बाद भी इसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था और असंतोष बढ़ता ही जा रहा था।

(4) औद्योगिक विकास और मजदूर वर्ग में जागृति -

औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप अनेक कारखानों की स्थापना हो चुकी थी। इनमें मजदूरों की संख्या अधिक थी। वे साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित थे। पूंजीपति वर्ग अपने लाभ के लिए अधिक शोषण करता था और वे अपने अधिकारों को भोग के लिए संगठित होते जा रहे थे। वे पूंजीपतियों के हाथों से सत्ता छीनकर कारखानों पर अपना अधिकार करना चाहते थे। पूंजीपति वर्ग को सरकार का समर्थन प्राप्त था और इस कारण मजदूर-वर्ग भी सरकारी का विरोधी था।

(5) भ्रष्ट नौकरशाही -

राज्य के समस्त बड़े पदों पर धनिक लोगों का आधिपत्य था जिन्हें

रूसी जनता से कोई सहानुभूति नहीं थी। राजा अपनी अयोग्यता के कारण इस विशाल नौकरशाही पर नियंत्रण रखने में असफल सिद्ध हुआ और इस भ्रष्ट नौकरशाही ने शासन में मनमानी कर जनता को असंतुष्ट और विरोधी बनाकर क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।

6) सेना की कमजोरी - रूसी सेनाएं शत्रुओं के मुकाबले में काफी कमजोर थी, फिर भी उन्होंने युद्ध के आरंभ में काफी वीरता का प्रदर्शन किया था। लेकिन अधिकारियों के कुव्यवस्था के कारण उन्हें रसद नहीं पहुंच पा रही थी, अतः सैनिकों की मौत तेजी से हो रही थी। ऐसी स्थिति में सेना की पराजय संभव थी। सेना इस हार के लिए सरकार को ही उत्तरदायी मानती थी और उसके प्रति असकी नाराजगी निरंतर बढ़ती जा रही थी। युद्ध में सेना के निरंतर पराजित होने रहने के कारण जनता का सरकार के प्रति रोष भी क्रांति के लिए बहुत कुछ जिम्मेदार था।

7) बौद्धिक क्रांति - रूस में कई वर्षों से पश्चिम यूरोप के उदारवादी विचार प्रवेश कर रहे थे। लेकिन जार तथा उसके प्रतिक्रिया पदाधिकारी उनका दमन में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। स्वयं रूस के टॉलस्टॉय,

तुर्गनेव, गोर्की आदि साहित्यकार भी रूसी जीवन की विषमताओं की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट कर रहे थे। इसके साथ ही कार्ल मार्क्स के क्रान्तिकारी समाजवादी विचारों का प्रभाव भी देश के श्रमिकों और बुद्धिजीवियों में बढ़ रहा था। देश में कई समाजवादी दल बन गए थे जिनका प्रभाव कृषकों और कारखानों के मजदूरों में बढ़ रहा था। इन्हीं में से एक दल के नेता लेनिन था जिसने मार्च क्रान्ति के फलस्वरूप निर्मित प्रजातन्त्रीय सरकार का तख्ता पलटकर सत्ता हस्तगत करली। साहित्यकारों और इन नवीन विचारों का भी क्रान्ति में काफी योगदान रहा।

क्रांति के परिणाम

बोल्शेविक दल ने रूस में संसार के इतिहास में प्रथम समाजवादी शासन की स्थापना की। कहने को तो कृषकों एवं मजदूरों का शासन था परंतु वास्तव में बोल्शेविक दल का अधिनायक तंत्र था।

द्वितीय, नई सरकार ने जर्मनी से ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि कर अपनी ओर से युद्ध की समाप्ति कर दी।

तृतीय, नयी सरकार ने जिन लोगों की सम्पत्ति और सत्ता छीन ली थी उन्होंने प्रजातंत्रवादी लोगों तथा बोल्शेविक दल के अन्य शत्रुओं ने उसका विरोध किया और इसके फलस्वरूप तीन वर्षों तक देश को भीषण गृह-कलह का सामना करना पड़ा।

चतुर्थ, नयी सरकार ने जमींदारों की समस्त भूमि बिना मुआवजे दिए छीनकर किसानों को दे दी और समस्त निजी कारखाने राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित कर दिए गए, और उनकी व्यवस्था मजदूरों की कमेटियों के हाथों सौंप दी। इस प्रकार उसने जमींदारों और पूँजीवाद का अन्त कर दिया।

पंचम, इस प्रकार रूसी समाज में जो विषमताएं थीं, उनका अंत हो गया। लेकिन वास्तुतः ये सामाजिक विषमताएं समाप्त नहीं हुईं, वे दूसरे रूप में प्रकट हो गई।

P.T.O

दूसरी, नई सरकार ने अपने आपको साम्यवाद का अग्रदूत मानकर समस्त संसार में साम्यवाद के प्रचार का बीड़ा उठाया और सर्वत्र सर्वहारा वर्ग की क्रांति के लिए उकसाना आरंभ किया जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में तनाव शुरू हो गया।

इस प्रकार बोल्शेविकों की विजय के अनेक कारण प्रगट हुए. जैसे :

(1) उन्हें रूस की विशाल कृषक जनता तथा कारखानों के मजदूरों का पूर्ण समर्थन प्राप्त था क्योंकि उन्हें भय था कि यदि बोल्शेविक लोग हार मान गए तो जमींदार लोग और उनसे पुनः भूमि छीन लेंगे और पूंजीपति लोग फिर से कारखानों पर अधिकार कर लेंगे।

2) उनकी विजय का दूसरा कारण रूस का विस्तार था। एक छोटे से देश में शत्रु उन्हें सरलता से घेरकर नष्ट कर सकते थे परंतु रूस जैसे विशाल देश में यह संभव नहीं था। युद्ध लम्बा खिंच गया और ट्राटस्की ने उससे लाभ उठाकर अपनी विशाल लाल सेना का संगठन कर लिया जिसके सैनिकों में क्रांति का जोश कूट-कूट कर भरा हुआ था।

3/ मित्र-राष्ट्र युद्ध से थके हुए थे। उनमें मतभेद होने के कारण पारस्परिक सहयोग का अभाव था; अतः उनका हस्तक्षेप प्रभावशाली न हो सका।

4) 'श्वेत' सेनाओं ने जनता पर अत्याचार भी बहुत किया। इसके साथ ही देशभक्त लोग अपने देश में विदेशी सेनाओं को देखकर क्रान्ति-विरोधियों को देशद्रोही समझने लगे और उनके विरुद्ध बोल्शेविक सरकार की सहायता करने लगे।

5) क्रान्ति-विरोधियों के नेता अयोग्य एवं भ्रष्ट थे।

6) मित्र राष्ट्रों के देश में भी मजदूरों ने उत्पादन बन्द करना आरम्भ कर दिया था जिसे देखकर उन्होंने अपनी सेनाएं गृह-कलह समाप्त होने के पहले ही वापस बुलाकर क्रान्ति विरोधियों को तटस्थ कर दिया।

——— ०० ———